समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ३.५०

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

• प्रकाशन दिनांक : १५ सितम्बर २०२१ • वर्ष : २५ • अंक : ३ (निरंतर अंक : २९१)
• भाषा : हिन्दी • पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

पूज्य बापूजी का ५८वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस : ७ अक्टूबर

दर्शन के बाद भी रही यात्रा अधूरी

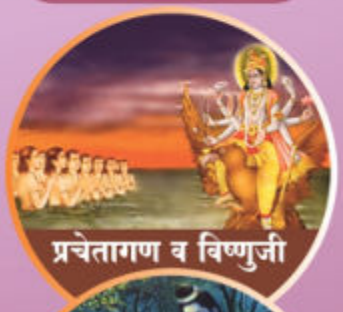
प्रचेतागण व विष्णुजी

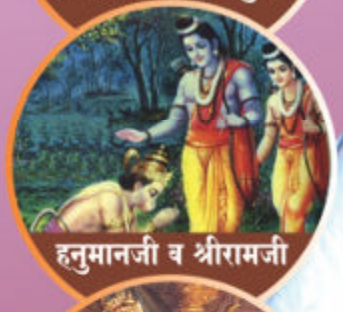
हनुमानजी व श्रीरामजी

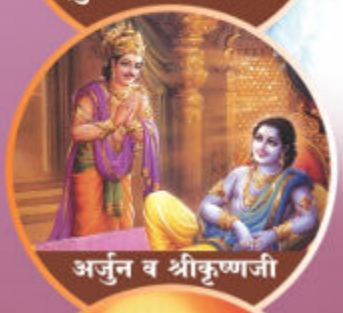
अर्जुन व श्रीकृष्णजी

माँ काली व रामकृष्णजी

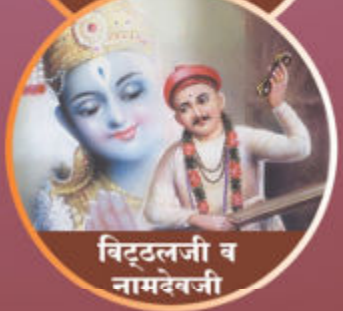
विट्ठलजी व नामदेवजी

भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

आत्मसाक्षात्कार से यात्रा हुई पूरी

प्रचेतागण व नारदजी

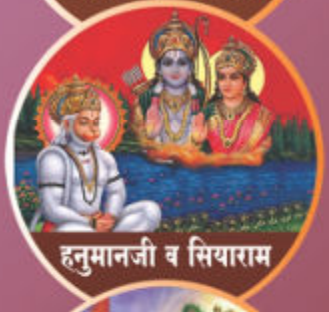
हनुमानजी व सियाराम

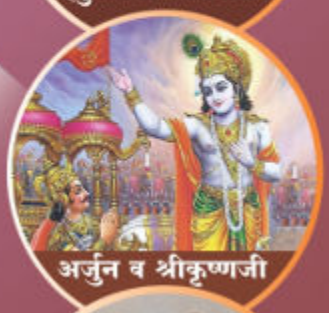
अर्जुन व श्रीकृष्णजी

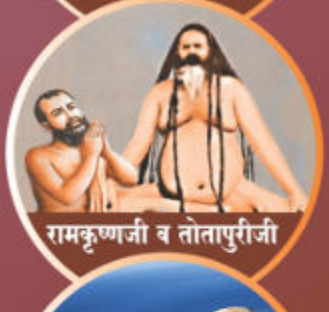
रामकृष्णजी व तोतापुरीजी

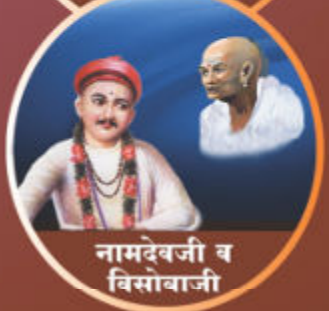
नामदेवजी व विसोबाजी

भगवद्-दर्शन से भी ऊँचा है आत्मसाक्षात्कार

पढ़ें पृष्ठ ६

भगवान का दर्शन अर्जुन को, हनुमानजी को भी हुआ था लेकिन जब तक उन्हें आत्मसाक्षात्कार नहीं हुआ था तब तक यात्रा अधूरी थी । जब श्रीकृष्ण ने उपदेश दिया तब अर्जुन को आत्मसाक्षात्कार, आत्मस्मृति हुई और रामजी जब अति प्रसन्न होते हैं एवं तत्त्वज्ञान का उपदेश देते हैं तब हनुमानजी को आत्मतृप्ति का अनुभव, आत्मसाक्षात्कार होता है। - पूज्य बापूजी

हाय राम ! वासना क्या-क्या कराती है काम ! १५ हुई प्राणों की रक्षा १४
...तो सदा तुम्हारी विजयादशमी ! ८ पुष्टिकर तथा बलवर्धक केला १३

...तो निश्चय ही आपको सफलता मिलेगी

आप अपनी शक्ति से अनभिज्ञ मत रहिये। उसको जानिये और उत्साह से उसका प्रयोग कीजिये। आप क्या नहीं कर सकते हैं ? आप सब कुछ कर सकते हैं। आप सारे दुःख मिटाकर अमिट सुख पा सकते हैं। आप सुख, प्रेम, शांति के दाता हो सकते हैं। आप बड़ी-बड़ी बाधाओं में अचल, निश्चिंत रह सकते हैं। आप ऐसे जिस भी ऊँचे लक्ष्य को पाना चाहते हैं उसके लिए जो करना चाहिए उसके जानकार सच्चे संतों के मार्गदर्शन में उत्साह से लगना चाहिए। आजकल भाषणबाजों की भरमार है।

उत्साह हमारे जीवन का सबसे शक्तिशाली अंग है। **क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे।** महापुरुषों की क्रियासिद्धि सामग्री में नहीं बल्कि उत्साह में निवास करती है। महात्माओं के जीवन का सबसे शक्तिशाली अंग है - उत्साह। क्या संत श्री आशारामजी बापू अकेले एक व्यक्ति नहीं हैं ? जरा बताइये ! जात-पात, मत-पंथ का भेद किये बिना **'सबका मंगल, सबका भला'** का उद्घोष करके विश्व-स्तर पर सेवाओं, सत्संग, भगवन्नाम-जप, साधना, ध्यान और प्रभुप्रेम की सरिता बहानेवाले इन व्यक्तित्व ने इस सृष्टि में क्या विलक्षण कार्य नहीं किया ? अच्छा, क्या महर्षि वेदव्यासजी अकेले एक व्यक्ति नहीं थे ? क्या श्रीमद् आद्य शंकराचार्यजी अकेले एक व्यक्ति नहीं थे ? क्या महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, स्वामी विवेकानंद, चैतन्य महाप्रभु, ऋषि दयानंद, छत्रपति शिवाजी, डॉ. हेडगेवारजी, महात्मा गांधी अकेले एक व्यक्ति नहीं थे ? क्या अद्भुत महिमा है ! आज हमारे ऋषियों, महात्माओं, आचार्यों में से हर एक का जो प्रभाव दिखाई पड़ता है, यह क्या किसी एक महापुरुष के उत्साह का फल नहीं है ? आज हमारे आद्य शंकराचार्यजी का, श्री रामानुजाचार्यजी का, श्री निम्बार्काचार्यजी, गुरु नानकजी, संत कबीरजी, साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज आदि एक-एक का जो असली वैभव अर्थात् आध्यात्मिक वैभव दिखाई पड़ता है, क्या यह किसी एक महापुरुष के उत्साह से भरपूर ज्ञानशक्ति एवं क्रियाशक्ति का फल नहीं है ?

प्रत्येक जीव के जीवन का तार ईश्वर से जुड़ा हुआ है। यदि वह खींचेगा तो उस एक व्यक्ति में ईश्वरीय शक्ति का आविर्भाव हो जायेगा और फिर वह बहुत कुछ कर सकता है। अतएव किसीको अपने जीवन से निराश नहीं होना चाहिए। आप बड़े उत्साह से अपने कर्तव्य-कर्म में (वास्तविक कर्तव्य-कर्म ईश्वरप्राप्ति में) जुट जाइये। अपनी ज्ञानशक्ति और क्रियाशक्ति का उत्साहपूर्वक सदुपयोग कीजिये। निश्चय ही आपको सफलता मिलेगी। ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों का सत्संग-लाभ आपके स्वभाव में निखार लायेगा। उत्तम-से-उत्तम स्वभाव का निर्माण होगा। सत्संग करते रहो।

हरि से लागा रहु रे भाई, तेरी बनत-बनत बन जाई। स्वभावविजयी भव।

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २५ अंक : ३ (निरंतर अंक : २९१)
प्रकाशन दिनांक : १५ सितम्बर २०२१ मूल्य : ₹ ३.५०
पृष्ठ संख्या : २४ (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
राकेशसिंह आर. चंदेल
प्रकाशन-स्थल :
संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण-स्थल :
हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर, (हि.प्र.) -१७३०२५.
सम्पादक : सिद्धनाथ अग्रवाल

सम्पर्क पता :
'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

*Email: lokkalyansetu@ashram.org,
*ashramindia@ashram.org
*Website: www.lokkalyansetu.org
www.ashram.org

लोक कल्याण सेतु' रुद्राक्ष मनका योजना

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

सदस्यता शुल्क :

भारत में :		विदेशों में :	
(१) वार्षिक :	₹ ३५	(१) पंचवार्षिक :	US $५०
(२) द्विवार्षिक :	₹ ६०	(२) आजीवन :	US $१२५
(३) पंचवार्षिक :	₹ १३०		
(४) आजीवन :	₹ ३४०		

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

- सद्गुरु की महिमा अवर्णनीय है.....४
- समझ से परे है गुरु-शिष्य का प्रेम.....६
- वचन दिया, पाला और तर गया.....७
- उन महापुरुषों को हम दे भी क्या सकते हैं ?..... ८
- जीवन में लाइये श्रीकृष्ण के गुण १०
- गुरु से सभीको समान लाभ क्यों नहीं होता ?.....१२
- रक्षासूत्र या कलावा क्यों धारण करें ?..... १३
- सद्गुरु से वास्तविक लाभ कौन नहीं उठाता ?.....१४
- सद्गुरु के मात्र एक उपदेश के आचरण से मालामाल !.....१५
- गुरुकृपा से मिला नया जीवन - पूनम कुमारी.....१७
- वर्षा ऋतु की स्वास्थ्य-समस्याओं में विशेष..... १७
- बहुगुणी चौलाई के स्वास्थ्य-लाभ.....१८
- गुरु बिना परम शांति नहीं..... १९
- सद्गुरु ही महान वैद्य हैं - संत पथिकजी.....२०
- सब मेरे सद्गुरु ही हैं - संत एकनाथजी.....२१
- ज्ञान-ध्यान व सेवा-भक्ति के उत्कृष्ट आश्रय कौन ?..... २२
- शिष्य का धैर्य व गुरु की करुणा-कृपा.....२३

* 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है। * 'अराधना' चैनल जम्मू में JK Cable पर उपलब्ध है।

* विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग *

अराधना
रोज सुबह ७:३० व रात्रि ८:३० बजे

DIGIANA DIVYA JYOTI
रोज रात्रि १०-०० बजे

मंगलमय
www.ashram.org/live
पर उपलब्ध

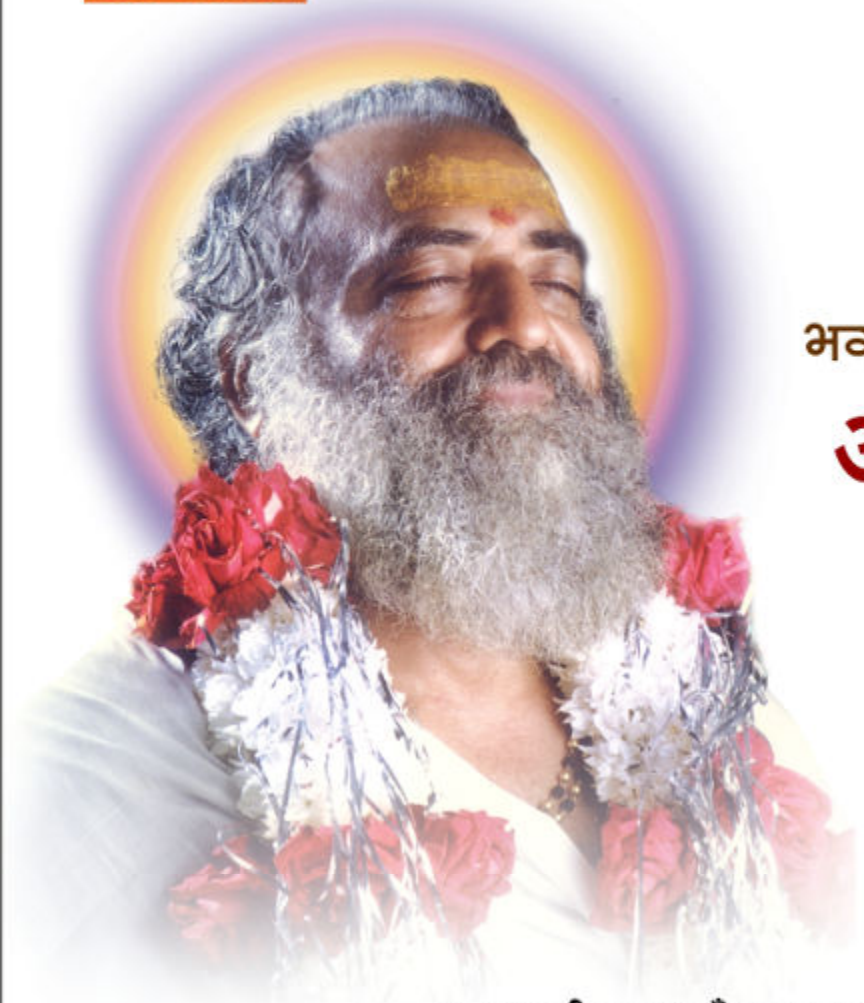

भगवद्-दर्शन से भी ऊँचा है

आत्मसाक्षात्कार

- पूज्य बापूजी

पूज्य बापूजी का ५८वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस : ७ अक्टूबर

सत्संग जो दे सकता है वह हजारों वर्ष की तपस्या नहीं दे सकती। सत्संग जो देता है – ऊँची भावना, ऊँची स्मृति, ऊँचा ध्यान, जप और व्यक्ति के ८४ लाख योनियों से निकलने की कुंजी, वह दूसरे किसी साधन से नहीं मिलता।

मैंने बहुतेरे साधन किये – कई मतों में, पंथों में किस्म-किस्म के पापड़ बेले। हमारा जन्म होने को था उसके पहले एक सौदागर मेरे पिता को एक ऊँचा बढ़िया झूला देकर गया। पिताजी के गुरु ने मेरे बारे में कहा कि 'यह महान संत बनेगा।' फिर ३ साल की उम्र में कुछ चमत्कार होने लगे, १० साल की उम्र में ऋद्धि-सिद्धियों के खेल होने लगे, २२ साल की उम्र तक न जाने क्या-क्या अनुभव हुए... तो हम समझते थे कि 'अपने से ऐसा हुआ, ऐसा हुआ...' और लोग भी बड़ा आदर करते थे, पिताजी भी हाथ जोड़ के पूछते थे, तथा रिश्तेदार भी, माइयाँ भी हाथ जोड़कर पूछती थीं कि क्या होना है ? वे बोलते थे : ''तुम जो बोलते हो वह होता है।''

अब हमको तो पता भी नहीं था, भगवान ही करवाते थे तो लगता था कि हाँ...

जब तक गुरु की आखिरी कुंजी नहीं मिली थी और ताला नहीं खुला था तब तक तो समझते थे बहुत कुछ मिला है... तब भी आत्मसाक्षात्कार बाकी था। जब गुरु-तत्त्व की प्यास जगी और गुरुशरण गये और आत्मसाक्षात्कार की पुण्य-घड़ियाँ जिस दिन आयीं वह दिन है –

आसोज सुद दो दिवस, संवत् बीस इक्कीस।
मध्याह्न ढाई बजे, मिला ईस से ईस॥

दोपहर के २:३० बजे वह पर्दा पूरा हटा – प्रकृति को जहाँ से सत्ता मिलती है उसके और हमारे बीच में जो पर्दा था वह गुरुकृपा से हटा... तो गुरुकृपा से जिस दिन बेपरदा दशा हुई उसको बोलते हैं आत्मसाक्षात्कार दिवस।

- पूज्य बापूजी

विजयादशमी, दशहरा : १५ अक्टूबर

दशहरे के दिन की अपनी महिमा है । १० इन्द्रियों में रत जीवात्मा भटक रहा है । रावण पर राम की विजय का दिवस, दीनता पर, आसुरी वृत्तियों पर, भटकनेवाले मन-इन्द्रियों पर जीवात्मा की विजय का दिवस है विजयादशमी ! चंचलता पर एकाग्रता की विजय, बहिर्मुखता पर अंतर्मुखता की विजय, तुच्छ विकारों पर शुद्ध सत्ता की विजय, दैत्यों पर देवों की विजय, दुःखों पर दुःखहारी हरि के नाम की, ॐकार की विजय का दिवस है विजयादशमी !

विजयादशमी विजय का त्यौहार है । गंदी आदतों पर विजय पाने का निर्णय करके लम्बा श्वास लो, अपने में जो कमी है उसको मन के सामने रखो और 'ॐ ॐ...' की गदा मारकर भगाओ । मन में संकल्प करो : 'उस कमी को मैंने भगा दिया । आज तक उसकी सीमा में मैं फँसा था, अब सीमा-उल्लंघन किया ।' अपने में जो कमी है उसको दूसरा व्यक्ति उतना नहीं समझता जितना

एक नाव में सवार होनेवाले तो तरते हैं लेकिन...

बाबा फरीद नाम के एक सूफी फकीर हो गये। वे अनन्य गुरुभक्त थे। गुरुजी की सेवा में ही उनका सारा समय व्यतीत होता था। एक बार उनके गुरु ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार ने उनको किसी खास काम के लिए मुलतान भेजा। वहाँ उन दिनों में शाह शम्स तबरेज के शिष्यों ने अपने गुरु के नाम का एक दरवाजा बनाया था और घोषणा की थी कि 'आज इस दरवाजे से जो गुजरेगा, वह जरूर जन्नत (स्वर्ग) में जायेगा।' हजारों फकीर और गृहस्थ उस दिन उस दरवाजे से गुजर रहे थे। नश्वर शरीर का त्याग होने के बाद स्वर्ग में स्थान मिलेगा ऐसी सबको आशा थी। फरीद को भी उनके मित्र-फकीरों ने दरवाजे से गुजरने के लिए खूब समझाया परंतु फरीद तो उनको जैसे-तैसे समझा-बुझाकर अपना काम पूरा करके बिना दरवाजे से गुजरे ही अपने गुरुदेव के चरणों में पहुँच गये।

सर्वांतर्यामी गुरुदेव ने उनसे मुलतान के समाचार पूछे और कोई विशेष घटना हो तो बताने के लिए कहा। फरीद ने शम्सजी के दरवाजे का वर्णन करके सारा वृत्तांत सुना दिया।

गुरुदेव बोले : ''मैं भी वहाँ होता तो उस पवित्र दरवाजे से गुजरता... तुम कितने भाग्यशाली हो फरीद कि तुमको उस पवित्र दरवाजे से गुजरने का सुअवसर प्राप्त हुआ!''

सद्गुरु की लीला बड़ी अजीबोगरीब होती है। शिष्य को पता भी नहीं चलता और वे उसकी कसौटी कर लेते हैं।

फरीद तो सत्शिष्य थे। उनकी अपने सद्गुरुदेव के प्रति अनन्य भक्ति थी। गुरुदेव के शब्द सुनकर वे बोले : ''कृपानाथ! मैं तो उस दरवाजे से नहीं गुजरा। मैं तो केवल आपके दरवाजे से ही गुजरूँगा। एक बार मैंने आपकी शरण ली है तो अब और किसीकी शरण मुझे नहीं जाना है।''

यह सुनकर ख्वाजा कुतुबुद्दीन की आँखों में प्रेम उमड़ आया। शिष्य की दृढ़ श्रद्धा और अनन्य शरणागति देख के उसे उन्होंने छाती से लगा लिया। उनके हृदय की गहराई से आशीर्वादात्मक शब्द निकल पड़े : ''फरीद! शम्स तबरेज के दरवाजे से गुजरनेवालों को तो जन्नत मिलेगी परंतु तुम्हारा दरवाजा तो ऐसा खुलेगा कि उसमें से जो भी कोई गुजरेगा उसे जन्नत से भी ऊँची गति मिलेगी।''

आज भी पाकिस्तान के पाक पट्टन में बने हुए बाबा फरीद के दरवाजे में से गुजरकर हजारों यात्री अपने को धनभागी मानते हैं। यह है अपने सद्गुरुदेव के प्रति अनन्य निष्ठा की महिमा!

जो भी अपने सद्गुरुदेव की पूर्ण शरणागति लेता है वह हर तरह के द्वन्द्व से निकल जाता है। वह जान चुका होता है कि दुनिया की हकीकत क्या है और किसलिए वह इस दुनिया में आया है। पूर्ण

पुष्टिकर तथा बलवर्धक

केला

पका केला स्निग्ध, शीतल, कृमिनाशक, तृप्तिकारक, वात-पित्तशामक तथा रस, रक्त, मांस, वीर्य व बल बढ़ानेवाला है। यह भूख-प्यास को मिटाता है व त्वचा को निखारता है।

यह संग्राहक (मल को बाँधनेवाला) तथा जीवनीय है। इससे आँतों की क्रिया सुधरती है तथा रक्त की अम्लता कम होती है। यह योनिदोष, रक्तपित्त, पथरी, नेत्ररोग एवं प्रमेह (मूत्र-संबंधी विकारों) को नष्ट करता है। मांसपेशियों तथा स्नायुओं को शक्ति देनेवाला एक अत्यंत पौष्टिक आहार है।

केले के पत्तों पर भोज्य पदार्थों को रखकर खाना लाभप्रद है। शरीर में जलन होने पर केले के पत्तों पर सोना लाभदायी है।

रसायनों से नहीं, प्राकृतिक ढंग से पकायें केले

वृक्ष पर पके हुए केले विशेष गुणकारी एवं पौष्टिक होते हैं। आजकल कच्चे केलों को तोड़कर उन्हें जल्दी पकाने के लिए विविध प्रकार के रसायनों (लहशाळलरश्री) का उपयोग किया जाता है जो बिल्कुल भी हितकर नहीं है। फल बेचनेवालों को चंद रुपयों के लालच में जनता के स्वास्थ्य को खराब करनेवाले हानिकारक रसायनों के प्रयोग की अपेक्षा निरापद तरीकों से फलों को पका के मानवता की सेवा करने का सौभाग्य पाना चाहिए।

अच्छी तरह से पका हुआ

हाय राम ! वासना क्या-क्या कराती है काम !

सनातन धर्म के किसी भी गुरु की बेटी ने कभी भी अपने गुरु के शिष्यों को अपने शिष्य बनाने का पाप नहीं किया है। सिख धर्म के १० गुरुओं में गुरु अमरदासजी तक तो पारिवारिक दायरे का बंधन न रखते हुए केवल शिष्य की योग्यता के आधार पर ही गुरु उनको अपना उत्तराधिकारी बनाते थे पर बाद में गुरु अमरदासजी की बेटी बीबी भानी ने यह वरदान माँग लिया कि गुरु-परम्परा गुरु के परिवार में ही रहे । उसके बाद भी जब तक गुरु ने

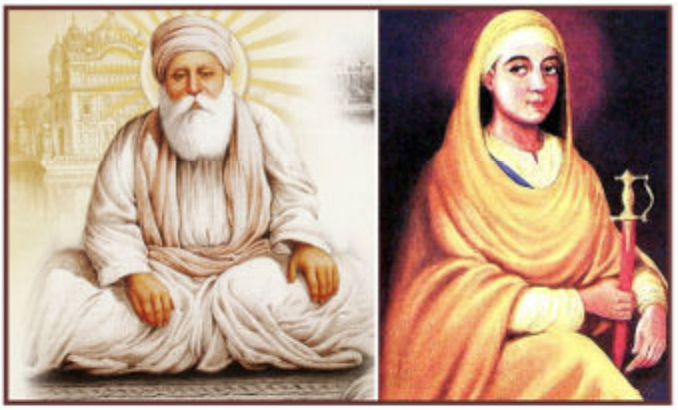

उत्तराधिकारी की घोषणा नहीं की तब तक किन्हीं गुरु के किसी भी बेटे या बेटी ने गुरु बनने की धृष्टता नहीं की* पर इस विषम कलिकाल में एक गुरुपुत्री उत्तराधिकारी बने बिना ही गुरु के दीक्षित शिष्यों और शिष्याओं को अपने शिष्य और शिष्याएँ बनाकर उनका आर्थिक शोषण करने लगी है। वह कैसे भ्रमित करके भोले-भाले साधकों की श्रद्धा हिलाकर अपने शिष्य बनाती है यह निम्न लेख के द्वारा जानकर भोले-भाले साधक उसके भ्रमजाल से बच के अपनी श्रद्धा और सम्पत्ति की सुरक्षा करें यही उद्देश्य है।

महाशिवरात्रि, २१ फरवरी २०२० के आलंदी-पुणे के प्रवचन में भारती शिवजी की तरफ संकेत करते हुए कहती है : ''इनसे एक बात हम अंदर से कहते हैं कि अच्छा है, तुम्हारे गणों में ऐसा भेदभाव नहीं था कि शिवजी अलग हैं और गणेशजी अलग हैं । हमें तो ऐसा सामना करना पड़ता है। तुम्हारे लिए ऐसी दिक्कत नहीं आयी वह अच्छा है। (समझदार श्रोता तालियाँ नहीं बजाते तो भी कोई बड़ी बात कह दी हो ऐसा दिखाने के लिए तालियाँ बजवाती है।) अच्छा हुआ शिवजी को और गणेशजी को यह कभी सामना नहीं करना पड़ा कि हे शिवजी के गणो ! गणेशजी के पास नहीं जाओ।''

यहाँ तो गणेशजी और शिवजी के नाम पर भारती ने श्रोताओं को झूठी बातें बताकर गुमराह करने का प्रयास बड़ी कूटनीति से किया है । शिवजी के गण आजकल के शिष्यों जैसे मूर्ख नहीं थे कि अपने इष्ट को छोड़कर गणेशजी की पूजा करने लगें। उनकी भक्ति व्यभिचारिणी नहीं थी, वे एकनिष्ठ थे। और गणेशजी भी शिवजी के गणों से पुजवाने की वासना से पीड़ित नहीं थे कि गणों के द्वारा स्वयं को पुजवाने के लिए उनको एकनिष्ठ भक्ति से भ्रष्ट करने के षड्यंत्र रचें।

शिव पुराण में रुद्र संहिता के कुमार खंड के १३वें से १८वें अध्याय में गणेशजी की उत्पत्ति आदि से संबंधित वर्णन है। मंथरा जैसी कुमंत्रणाएँ देनेवाली दासियाँ, सहेलियाँ तो जहाँ-तहाँ होती ही हैं, जो कुमंत्रणाएँ देकर, बहकावे में डाल के अपनी स्वार्थसिद्धि में लगी रहती हैं। कैलास पर भी कुछ ऐसी दासियाँ, सखियाँ थीं, जो ईर्ष्यालु थीं एवं अपनी स्वार्थसिद्धि में शिवजी के गणों को बाधा समझती थीं और पार्वतीजी को भड़काती रहती थीं। एक बार जया तथा विजया नाम की सखियों ने मिलकर पार्वतीजी से कहा : ''शिवजी के सभी गण उनकी आज्ञा में तत्पर रहते हैं। वे सभी नंदी, भृंगी आदि हमारे भी हैं। असंख्य प्रमथगण हैं परंतु

सदाबहार तेल

यह बालों का झड़ना, असमय सफेद होना, गंजापन, रूसी आदि समस्याओं में लाभकारी है। यह बालों को काला, चमकदार तथा घना बनाने में सहायक है।

आँवला भृंगराज केश तेल

यह बालों की उपरोक्त समस्याओं एवं सिरदर्द, मस्तिष्क की कमजोरी आदि को दूर करता है। बालों की जड़ों को मजबूत करता है व उनको बढ़ाकर उनमें चमक लाता है। दिमाग को ठंडा रखता है व स्मरणशक्ति को बढ़ाता है।

एलोवेरा जेल

यह त्वचा को कोमल बनाता है और उसमें निखार लाता है। त्वचा की कील-मुँहासे, काले दाग-धब्बे व झुर्रियों से रक्षा करता है। यह रूखी व तैलीय त्वचा दोनों के लिए हितकारी है। त्वचा को हानिकारक किरणों व प्रदूषण से बचाता है।

स्पेशल मालिश तेल

यह तेल जोड़ों के दर्द के लिए अत्यंत उपयुक्त है। अंदरूनी चोट, पैर में मोच आदि में हलके हाथ से मालिश करके गर्म कपड़े से सेंकने पर शीघ्र लाभ होता है।

अच्युताय मलहम

यह दाद, खाज, खुजली आदि चमड़ी के रोगों तथा फंगल व बैक्टीरियल इन्फेक्शन में लाभकारी है, साथ ही पैरों की कटी-फटी एड़ियों के लिए बहुत उपयोगी है।

दाँतों के लिए लाभदायी विशिष्ट औषधियों से बने

दंत सुरक्षा टूथपेस्ट एवं दंतमंजन

ये आपके दाँतों को सम्पूर्ण सुरक्षा प्रदान करते हैं। ये दाँतों को साफ करते हैं एवं मसूड़ों को मजबूत रखते हैं। इनके नियमित उपयोग से मसूड़ों की सूजन, मसूड़ों से खून निकलना, दाँतों का दर्द, दाँतों का हिलना, दाँतों की सड़न आदि दंत-रोगों से रक्षा होती है।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व सभीके विस्तृत लाभ आदि की जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2021-2023
Issued by SSPO's-AHD
Valid upto 31-12-2023
LWPP No. PMG/NG/045/2021-2023
(Issued by PMG GUJ. valid upto 31-12-2023)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month

जनसेवा एवं राष्ट्र-सुरक्षा हेतु संकल्प-बल व आत्मबल परिपुष्ट हो इस उद्देश्य को लेकर

महिला उत्थान मंडल ने बाँधे रक्षासूत्र

मेरठ

गांधीनगर (गुज.)

बाड़मेर (राज.)

कोटा (राज.)

जमशेदपुर

सरखा, जि. कबीरधाम (छ.ग.)

महसाणा (गुज.)

भिलाई, जि. दुर्ग (छ.ग.)

सांसद, राणापुर (म.प्र.)

विधायक, राजपुरा (पंजाब)

आयुक्त, सहारनपुर (उ.प्र.)

जिलाधीश, यवतमाल (महा.)

उपजिलाधीश, अहमदाबाद

कैदी उत्थान कार्यक्रम के अंतर्गत कारागृहों में भी मनाया रक्षाबंधन

बाड़मेर

इंदौर

जयपुर

बाल सुधार गृह, पुलगाँव, जि. दुर्ग (छ.ग.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

वनौषधियों का सेवन करनेवाली श्योपुर गौशाला की गीर व अन्य देशी नस्ल की गायों का

स्वर्णक्षार युक्त शुद्ध देशी घी

बिलोना घी

देशी गाय के स्वर्णक्षार युक्त शुद्ध घी को धरती का अमृत कहकर नवाजा गया है, जो आँखों के लिए विशेष लाभकारी, जठराग्नि तथा बल-वीर्य वर्धक, त्रिदोषशामक एवं स्मृति, बुद्धि व मेधाशक्ति वर्धक तथा लावण्य, कांति व ओज-तेज की अत्यंत वृद्धि करनेवाला एवं अलक्ष्मी (निर्धनता, दुर्भाग्य), पाप आदि को दूर करनेवाला, मंगलदायक, सुगंधयुक्त, रसायन (tonic), रोचक, दीर्घ जीवन व यौवन प्रदायक एवं समस्त घृतों में उत्तम तथा अधिक गुणकारी है।

गाय के घी का दीपक जलाने से वातावरण पवित्र, विशुद्ध व मंगलकारी होता है। रूसी वैज्ञानिक शिरोविच के अनुसार एक चम्मच (१० ग्राम) गोघृत की कुछ बूँदें अंगारों पर या गौ-कंडों पर डालते रहने से पवित्र, ऊर्जावान एक टन प्राणवायु (ऑक्सीजन) बनती है, जो अन्य किसी भी उपाय से सम्भव नहीं है।

श्योपुर गौशाला की गायें हजारों एकड़ जंगल में फैली हुई वनौषधियों का सेवन करती हैं। उनके दूध में दिव्य औषधीय तत्त्व पाये जाते हैं। उस दूध से बना यह शुद्ध घी विशेष गुणकारी है।

- १ लीटर (९१० ग्राम) : ₹ १४०० • ५०० मि.ली. (४५५ ग्राम) : ₹ ७००
- २५० मि.ली. (२२८ ग्राम) : ₹ ३६०

प्राप्ति हेतु सम्पर्क : ७२२२९६३५२४, ७०१८१५३५३४